

कक्षा-8



पाठ 2 लाख की चूड़ियाँ



पाठ 2

लाख की चूड़ियाँ

लेखक - कामतानाथ

जन्म - 22 सितम्बर 1935

जन्म स्थान - लखनऊ

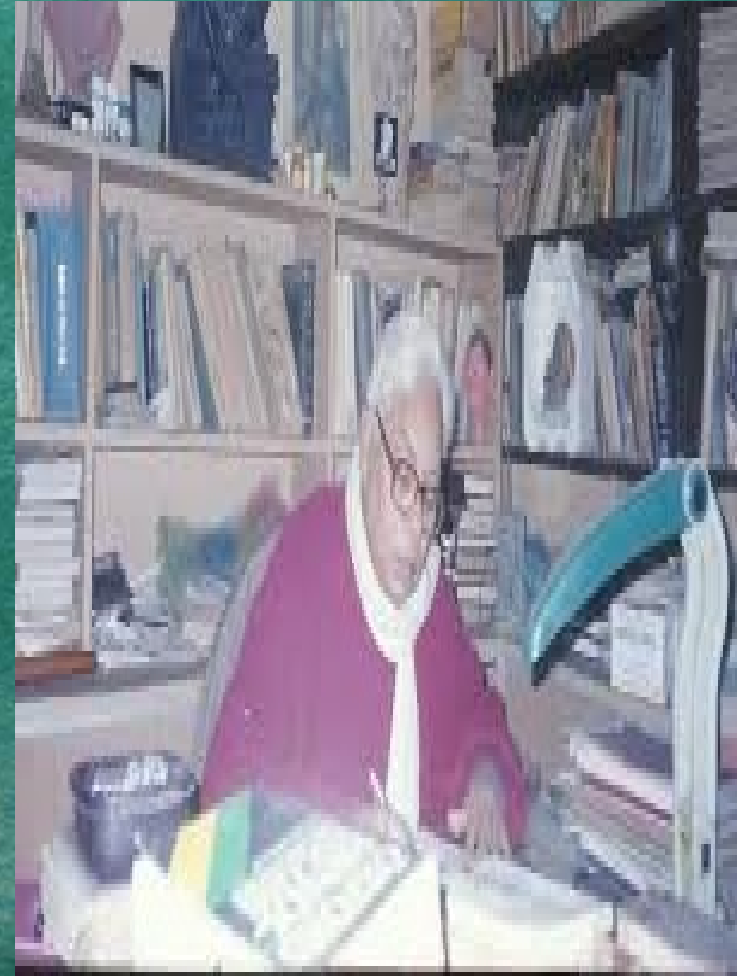
सम्मानित - उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने 'साहित्य भूषण' पुरस्कार ,मध्य प्रदेश साहित्य परिषद की ओर से 'मुक्तिबोध पुरस्कार',उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से 'यशपाल पुरस्कार',साहित्य भूषण' तथा 'महात्मा गांधी सम्मान'

रचनाएँ- समुद्र तट पर खुलने वाली खिड़की (उपन्यास)

छुट्टियाँ सब ठीक हो जाएंगे रिश्ते-नाते (कहानी संग्रह)

दिशाहीन, फूलन, संक्रमण (नाटक)

मृत्यु - 7 मई 2015



भारतीय ग्रामीण संस्कृति



पाठ

सारे गाँव में बदलू मुझे सबसे अच्छा आदमी लगता था क्योंकि वह मुझे सुंदर-सुंदर लाख की गोलियाँ बना कर देता था।
वैसे तो मेरे मामा के गाँव का होने के कारण मुझे बदलू को

बदलू मामा कहना चाहिए था परंतु मैं उसे 'बदलू मामा' ना कहकर बदलू काका कहा करता था।



बगल में भट्ठी दहकती रहती जिसमें वह लाख पिघलाया करता। सामने एक लकड़ी की चौखट पड़ी रहती जिस पर लाख के मुलायम होने पर वह उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता। पास में चार-छह विभिन्न आकार की बेलननुमा मुँगेरियाँ रखी रहतीं जो आगे से कुछ पतली और पीछे से मोटी होतीं।

लाख की चूड़ी का आकार देकर वह उन्हें मुँगेरियों पर चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता और तब एक-एक कर हाथ की चूड़ियाँ बना चुकने के पश्चात् वह उन पर रंग करता।



बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आसपास के गाँव के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता ना था उसका अभी तक वस्तु विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे बदलू स्वभाव से बहुत सीधा था। मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा। हैं, शादी विवाह के अवसरों पर वह अवश्य ज़िद पकड़ जाता था। मुझे याद है, मेरे मामा के यहाँ किसी लड़की के विवाह पर जरा -सी किसी बात पर बिगड़ गया था और फिर उसको



मनाने में लोहे लग गए थे। विवाह में उसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को सारे वस्त्र मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी मिलती और रुपए जो मिलते सो अलग।

यदि संसार में बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो वह थी काँच की चूड़ियों से। यदि किसी भी स्त्री के हाथों में उसे काँच की चूड़ियाँ दिख जातीं तो वह अंदर- ही- अंदर कुढ़ उठता और कभी-कभी तो दो-चार बातें भी सुना देता। मुझसे तो वह घंटों बातें किया करता। कभी मेरी पढ़ाई के बारे में पूछता, कभी मेरे घर के बारे में और कभी यों ही शहर के जीवन के बारे में। मैं उससे कहता कि शहर में सब काँच की चूड़ियाँ पहनते हैं तो वह उत्तर देता, "शहर की बात

काँच की चूड़ियाँ



और है, लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है। वहाँ तो औरतें अपने मरद का हाथ पकड़कर सड़कों पर घूमती भी हैं और फिर उनकी कलाइयाँ नाजुक होती हैं न! लाख की चूड़ियाँ पहनें तो मोच ना आ जाए।"

मेरे पिता की एक दूर के शहर में बदली हो गई और एक लंबी अवधि तक मैं अपने मामा के गाँव न जा सका। तब लगभग आठ-दस वर्षों के बाद जब मैं वहाँ गया तो इतना बड़ा हो चुका था कि लाख की गोलियों में मेरी रुचि नहीं रह गई थी।

इस बीच मैंने देखा गाँव में लगभग सभी स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ पहने हैं। विरले ही हाथों में मैंने लाख की चूड़ियाँ देखी तब एक दिन सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया।

मेरे मामा की छोटी लड़की आँगन में फिसलकर गिर पड़ी और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई और उससे खून बहने लगा। मेरे मामा उस समय घर पर न थे। मुझे ही उसकी मरहम-पट्टी करनी पड़ी। तभी सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया।



आजकल काम नहीं करते काका? मैंने पूछा।
नहीं लला काम तो कई साल से बंद है। मेरी बनाई हुई
चूड़ियाँ कोई पूछे तब तो। गाँव-गाँव में काँच का प्रचार
हो गया है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, मशीन युग
है न यह लला ! आजकल सब काम मशीन से होता है।
खेत भी मशीन से जोते जाते हैं और फिर जो सुंदरता
काँच की चूड़ियों में होती है लाख में कहाँ संभव है?
मुझे लगा उसके अंदर कोई बहुत बड़ी व्यथा छिपी है।
मैं देर तक सोचता रहा कि इस मशीन युग ने कितने
हाथ काट दिए हैं। कुछ देर फिर शांति रही जो मुझे
अच्छी नहीं लगी।
रज्जो ने चार-पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा
दिए।



आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया
तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए
उसके हाथों पर ठिठक गई। गोरी-
गोरी कलाईयों पर लाख की चूड़ियाँ
बहुत ही फब रही थीं।



बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली और बोल
पड़ा यही आखिरी जोड़ा बनाया था
जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर।
दस आने पैसे मुझको दे रहे थे। मैंने
जोड़ा नहीं दिया। कहा, शहर से ले
आओ।

मैंने आम ले लिए और खाकर थोड़ी
देर पश्चात चला आया। मुझे प्रसन्नता
हुई कि बदलू ने हारकर भी हार नहीं
मानी थी। उसका व्यक्तित्व काँच की
चूड़ियों जैसा न था कि आसानी से टूट
जाए।

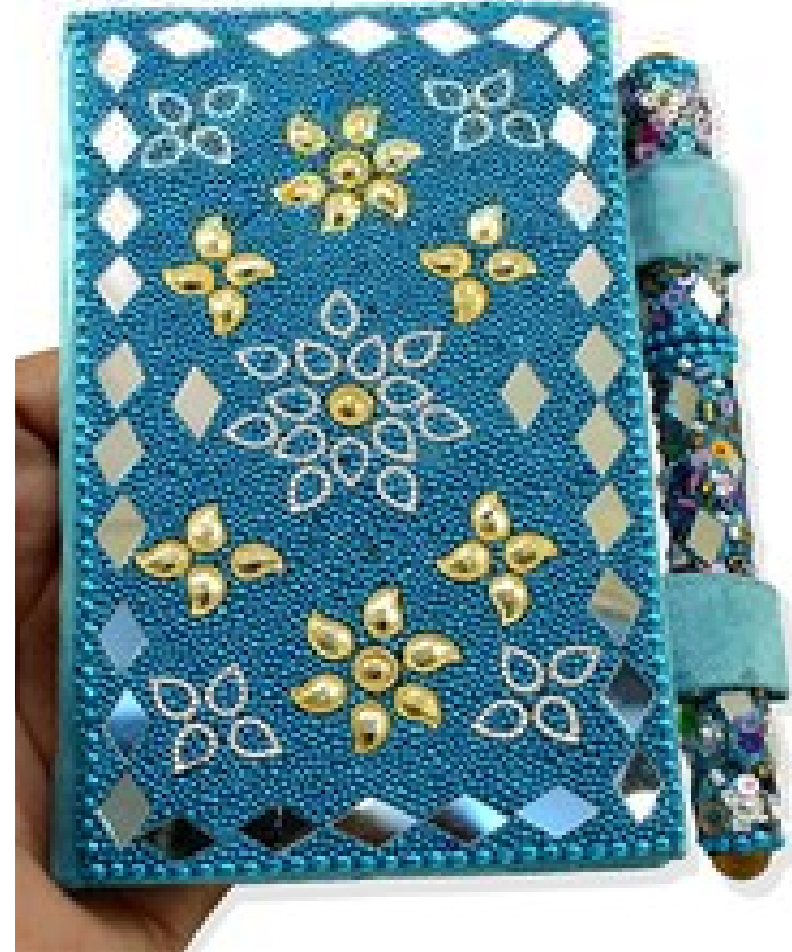


दम तोड़ते कुटीर उद्योग,
बेकार होते हाथ

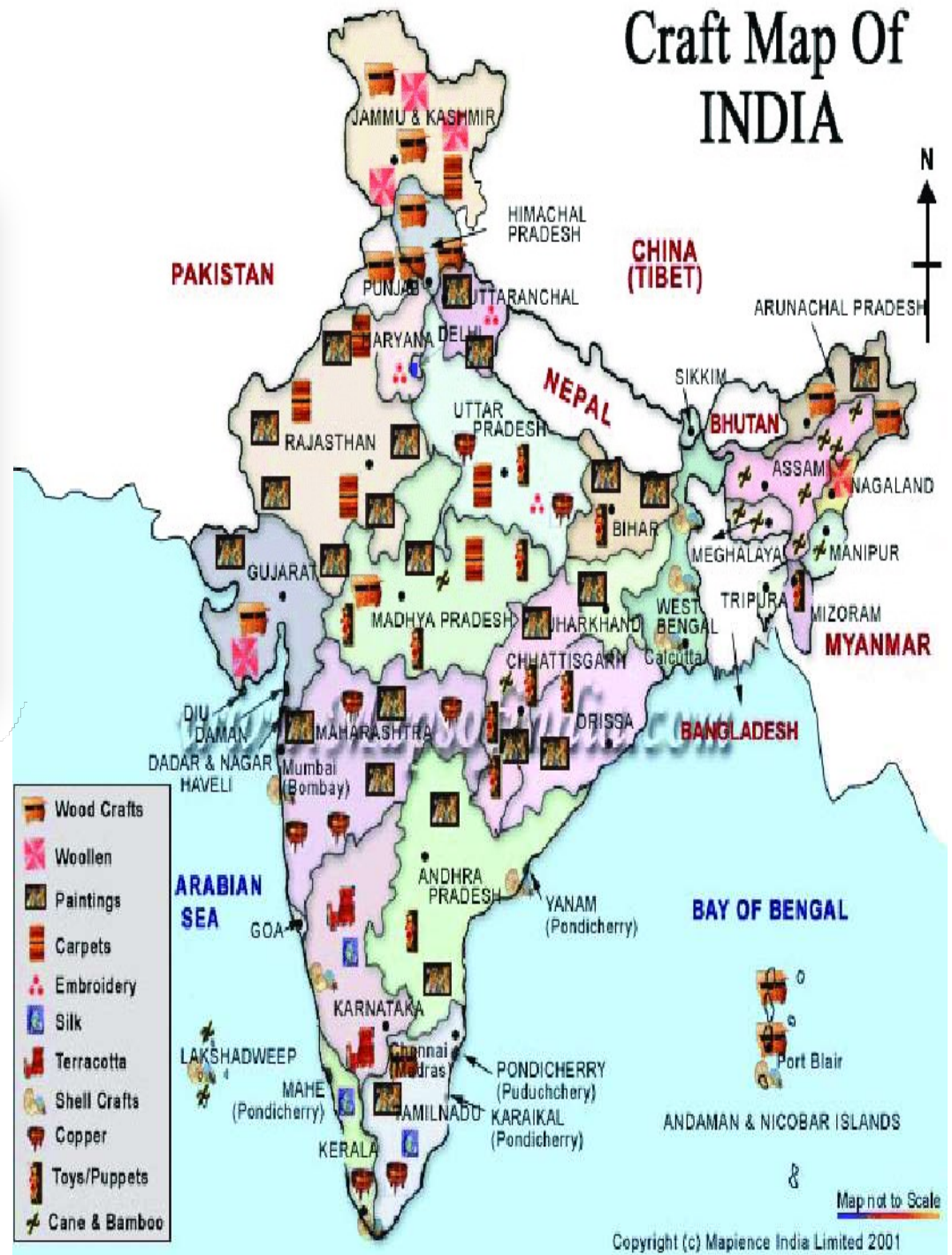
लाख से बनने वाली अन्य वस्तुएँ



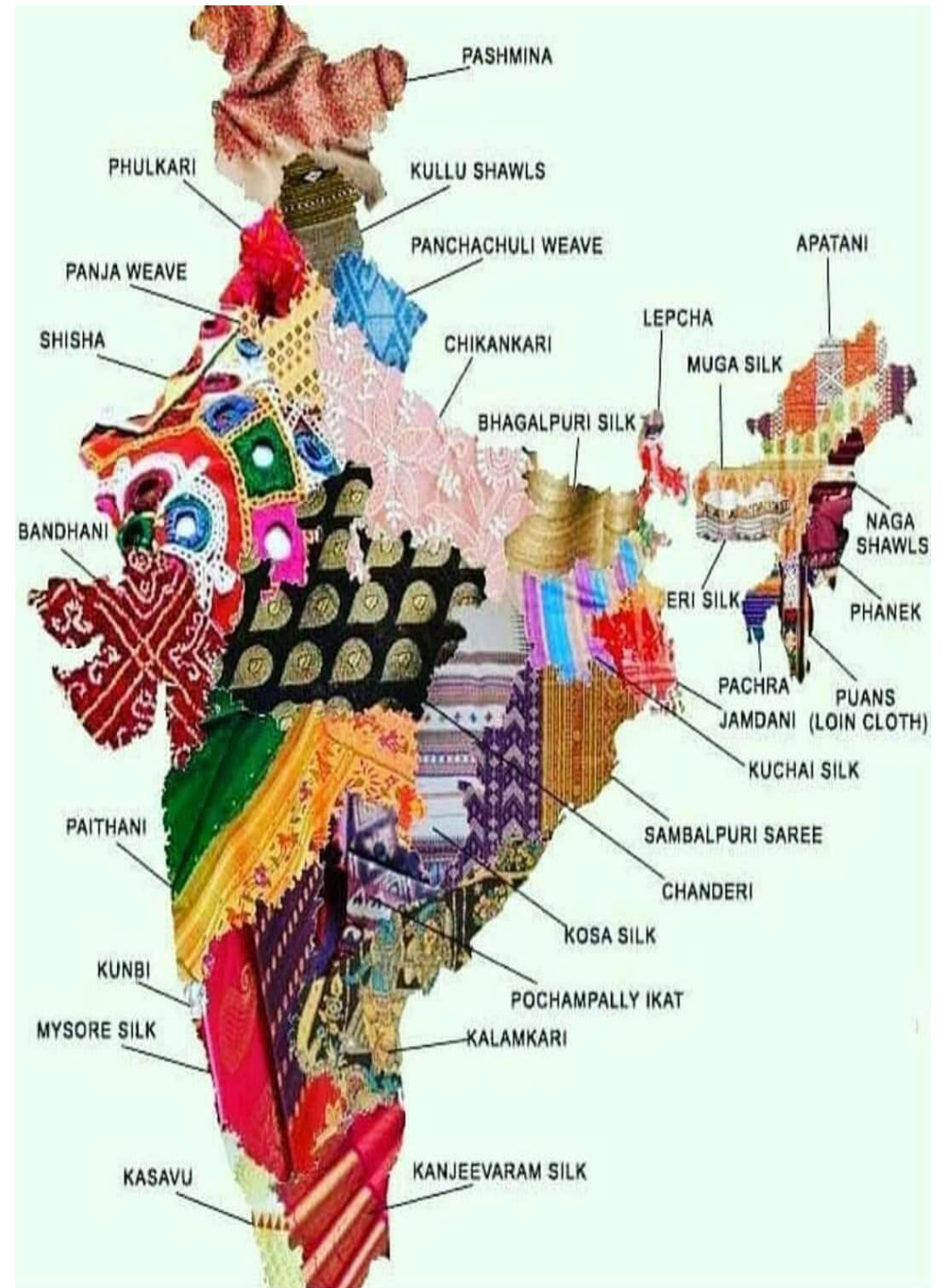
लाख से बनने वाली अन्य वस्तुएँ



भारत का शिल्प मानचित्र



भारतीय हथकरघा



MIND MAP

लेखक हर बार खुशी से मामा के घर जाना।

गाँव में लेखक को सबसे प्रिय बदलू काका लगना।

बदलू द्वारा लेखक को लाख की रंग-बिरंगी गोलियाँ देना।

बदलू के पास बैठकर चूड़ियाँ बनने की प्रक्रिया को ध्यान से देखना।

बदलू की लाख की चूड़ियों की गाँव में माँग होना।

मशीनीकरण से बदलू का बेरोज़गार होना।

काँच की चूड़ियों का प्रचलन बढ़ना।

